वर्तनी

वर्तनी को हिज्जे या अंग्रेजी में स्पेलिंग कहते हैं । यानी किसी शब्द, स्वर, व्यंजन, अनुनासिक, मात्रा आदि के क्रमशः स्थान के निर्धारण प्रयोग को वर्तनी कहा जाता है ।

वर्तनी में शुद्ध तथा अशुद्ध रूपों के चलते कोई विशेष समस्या नहीं होती है क्योंकि अशुद्ध रूप को सुधारा जा सकता है । समस्या वहाँ होती है जहाँ शुद्ध रूप ही विवादास्पद हो जाता है । कोई जायेंगे लिखता है, कोई जाएँगे लिखता है तो कोई लिखता है जायँगे । वर्तनी का विवाद विभक्ति की स्थिति को लेकर भी रहा है । कोई 'राम को' सही मानता है तो कोई 'रामको'; जैसे आपको ।

विवाद के विवरण से बचते हुए यहाँ हम कुछ विवादास्पद प्रयोगों के अपेक्षाकृत निर्णीत और आधुनिकतम मान्य रूप के कुछ उदाहरण देखेंगे ।

हमें ध्यान रखना चाहिए कि जहाँ किसी वर्ण के दो रूप या किसी शब्द की दो वर्तनियाँ पूर्ण शुद्ध हैं वहाँ विकल्प के साथ दोनों को स्वीकार करें । ऐसे उदाहरणों में चिह्न और चिह्न, या सिद्धि और सिद्धि को देखा जा सकता है । प्रयोग या रूप का वैविध्य समृद्धि का सूचक है । विवाद खत्म करें; वैविध्य नहीं ।

कुछ विवादास्पद प्रयोगों के शुद्ध रूप :

1. आइए, जाइए, गाइए, दिखाइए, कीजिए, लीजिए, पीजिए, उठिए, बैठिए, बुलाइए, रहिए, चलिए, करिए, पढ़िए आदि ।
2. नई, विजयी, पढ़ाई, लिखाई, खिंचाई, कमाई आदि ।
3. जाएगा, पाएगा, खाएगा, करवाएगा आदि ।
4. हुए, लिए, कहुए, कौए आदि ।
5. दन्त-दंत, पम्प-पंप, चञ्चल-चंचल, कंक-कङ्क, दोनों रूप विकल्प से शुद्ध हैं ।
6. हजारीप्रसाद द्विवेदी, महावीरप्रसाद द्विवेदी, सूरदास, कबीरदास, तुलसीदास, बिहारीलाल आदि ही सही हैं । प्रसाद-दास आदि अलग करके नहीं लिखना चाहिए ।
7. विभक्तियों को, संज्ञा पदों को अलग करके लिखना ठीक है जबकि सर्वनाम के साथ मिलाकर लिखना सर्वमान्य हो चुका है–
   संज्ञा - राम की, मोहन को, श्याम के लिए, पेड़ से, घर में, आदि सर्वमान्य हैं ।
   सर्वनाम - आपकी, उनको, उसके लिए, आपसे, मुझसे, तुममें आदि सर्वमान्य हो चुके हैं ।
8. मिलकर जाना, पूछकर आना चाहिए, खाकर बैठो, करके बोलो आदि प्रयोग शुद्ध सर्वमान्य हैं ।
9. पंचमाक्षर के विकल्प में अनुस्वार दें, परंतु स्वरगत अनुनासिकता के लिए चंद्रबिंदु ही मान्य है ।
   कान्ति - कांति, हँसना, डँसना, फँसना, खाँसी आदि ।
10. शिरोरेखा के ऊपर कोई चिह्न ी, ं, ै, ो, ौ, ँ, '' आदि रहने पर चंद्रबिंदु की भूमिका में केवल बिंदु दिया जाता है, परंतु उसे अनुस्वार कहना ठीक नहीं । जैसे - खायें, जायें आदि ।
11. संज्ञा, संयत, अंश, संरक्षण, संवाद, संशोधन आदि में अनिवार्यतः अनुस्वार का प्रयोग ही मान्य है । इनमें पंचमाक्षर का संयोग नहीं चल सकता ।

◆ ◆ ◆